प्रातः सभा 16/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बच्चों को पहले2 एक ही प्वाइंट समझने की है कि हम सभी भाई2 हैं और वह सभी का बाप है। उनको सर्वशक्तिवान कहा जाता है। तुम्हारे में सर्वशक्ति थी। तुम विश्व पर राज्य करते थे। भारत में ही (इ)न देवी–देवताओं का राज्य था। गोया तुम बच्चों का राज्य था। तुम पवित्र देवी देवताएँ थे। तुम्हारा जो कुल वा डिनायस्टी है वह सभी निर्विकारी थे। कौन निर्विकारी थे? आत्माएँ। अभी फिर तुम निर्विकारी बन रहे हो। जैसे ...क सर्वशक्तिवान बाप को याद कर उनसे शक्ति ले रहे हो। बाप ने समझाया है आत्मा ही 84 का पार्ट बजाती है। उनमें जो सतोप्रधान की ताकत है वह फिर दिन प्रति दिन कम होती जाती है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है। जैसे बैटरी की ताकत कम होती जाती है तो मोटर खड़ी हो जाती है। बैटरी डिसचार्ज हो जाती है। आत्मा की बैटरी फुल डिसचार्ज नहीं होती है। कुछ न कुछ ताकत रहती है। जैसे कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं उसमें घृत डालते ही रहते हैं कि ज्योत बुझ न जाये। बैटरी में ताकत कम होती है। फिर चार्ज करने .... रखते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो तुम्हारी आत्मा सर्वशक्तिवान थी। अभी फिर तुम सर्वशक्तिवान बाप से अपना बुद्धियोग लगाते हो .... बाप की शक्ति हमारे में आये। क्योंकि शक्ति कम हो गई है। थोड़ी जरूर रहती है। एकदम खत्म हो जाये फिर शरीर न रहे। आत्मा बाप को याद करते2 बिल्कुल ही प्योर हो जाती है। सतयुग में तुम्हारी बैटरी फुल चार्ज होती है, फिर थोड़ी2 कम होती जाती है। त्रेता तक दो लीटर अथवा मीटर समझो कम होती है, जिसको कला कहा जाता है। फिर कहेंगे आत्मा जो सतोप्रधान थी वह सतो बनी। ताकत कम होती जाती है। तुम समझते हो हम मनुष्य से देवता बन जाते हैं सतयुग में। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। अभी तुम तमोप्रधान बन गये हो। तो ताकत का दिवाला निकल गया है। फिर बाप को याद करने से पूरी होती जावेगी। क्योंकि तुम जानते हो देह सहित देह के जो भी सभी संबंध हैं यह सभी खत्म हो जाने हैं। फिर तुमको बेहद का राज्य मिलता है। बाप भी बेहद का है तो वरसा भी बेहद का देते हैं। अभी तुम पतित हो। तुम्हारी आत्मा की ताकत बिल्कुल ही कम हो गई है। हे बच्चों अभी तुम मुझे याद करो। मैं ऑलमाइटी हूँ। मेरे द्वारा तुमको ऑलमाइटी राज्य मिलता है। सतयुग में देवी–देवताएँ सारे विश्व के मालिक थे। पवित्र थे। दैवीगुणवान थे। अभी वह दैवीगुण नहीं हैं। सभी की बैटरी पूरी डिसचार्ज होने लगी है। फिर अभी बैटरी भरनी है। सो सिवाय परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाने बैटरी चार्ज नहीं हो सकती है। वह बाप ही एवर प्योर है। यहाँ सभी हैं इम्प्योर। जब प्योर रहते हैं तो बैटरी चार्ज रहती है। तो अभी बाप समझाते हैं एक को ही याद करना है। ऊँच ते ऊँच है भगवान। बाकी सभी है रचना। रचना को रचना से वरसा मिलता। क्रियेटर तो एक ही है। वह है बेहद का बाप। बाकी तो सभी हैं हद के। बेहद के बाप को याद (करने) से बेहद की बादशाही मिलती है। तो बच्चों को दिल अन्दर समझना चाहिए हमारे लिये बाबा नई दुनियाँ स्थापन कर रहे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार स्वर्ग स्थापन हो रही है। तुम समझते हो सतयुग आने वाला है। सतयुग में होता ही है सदा सुख। वह कैसे मिलता है? बाप बैठ समझाते हैं मामेकम् याद करो। मैं स... पवित्र हूँ। मैं कब मनुष्य तन नहीं लेता हूँ, न दैवी तन लेता, न मनुष्य तन लेता हूँ अर्थात् मैं जन्म मरण (में) नहीं आता हूँ। सिर्फ तुम बच्चों को स्वर्ग की बादशाही देने लिये जब यह 60 वर्ष की वानप्रस्थ अवस्था में है तब इनके तन में आता हूँ। यही पूरा सतोप्रधान से तमोप्रधान बना है नम्बरवन। ऊँच ते ऊँच भगवान, फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर कह देते हैं। वह कोई है नहीं। बाप इनका भी अर्थ समझाते .... यह सिर्फ़ साक्षात्कार होता है। सूक्ष्मवतन बीच का है ना। जहाँ शरीर नहीं हो सकती। सूक्ष्म शरीर सिर्फ़ दिव्य दृष्टि .... देखा जाता है। ब्रह्मा तो है सफेद वस्त्रधारी। वह विष्णु है हीरे जवाहरों से सजाया हुआ। फिर शंकर के गले (में) नाग आदि दिखाते हैं। ऐसे तो शंकर आदि हो नहीं सकता। दिखाते हैं अमरनाथ पर शंकर ने पार्वती को ..... सुनाई। अभी सूक्ष्मवतन में क्या कथा सुनावेंगे? कथा तो निराकार परमपिता परमात्मा को सुनानी है। उन

..... भी है ना। सूक्ष्मवतन में फिर मनुष्य कहाँ से आये। मनुष्य सृष्टि तो यहाँ है ना। बाकी वह तो सिर्फ़ सा॰ ..... लिये फरिश्ते हैं। जो बिल्कुल पवित्र हो जाते हैं उनको सा॰ होता है। ऐसे फरिश्ते बन फिर ....युग में यहीं ही आकर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह ब्रह्मा कोई विष्णु को याद नहीं करते हैं। यह भी शिव(बाबा) को याद कर और यह विष्णु बनते हैं। तो यह समझना चाहिए ना इन्होंने यह राज्य कैसे पाया। लड़ाई आदि कुछ होती ही नहीं। देवताएँ हिंसा करेंगे। अभी तुम बाप को याद करने से राजाई लेते हो। कोई माने न (माने)। गीता में भी है बच्चों देह सहित देह के सभी धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। उनको तो देह है नहीं जो (मम)त्व रखें। कहते हैं थोड़े ही समय के लिये शरीर का लोन लेता हूँ, नहीं तो मैं नॉलेज कैसे दूँ। मैं बीजरूप हूँ .....। इस सारे झाड़ की नालेज मेरे पास ही है और किसको भी पता नहीं है। सृष्टि की आयु कितनी है। कैसे (उत्प)त्ति, पालना, विनाश होती है। मनुष्य पता तो जरूर होना चाहिए ना। मनुष्य ही पढ़ते हैं, जानवर तो नहीं (पढ़ें)गे ना। वह पढ़ते हैं हद की पढ़ाई। बाप तुमको बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। जिससे तुमको बेहद का मालिक (बना)ते हैं। तो यह समझना चाहिए भगवान कब मनुष्य को अथवा देहधारी को नहीं कहा जाता है। इन्हों को सूक्ष्म देह है ना। इन्हों का नाम ही अलग है। इनको भगवान नहीं कहा जाता। यह (शरीर) तो इस दादा आत्मा का तख्त था। अकाल तख्त है ना। अभी यह अकालमूर्त बाप का तख्त है। अमृतसर में भी एक अकाल तख्त है ना। बड़े2 जो होते हैं वहाँ अकाल तख्त पर जाकर बैठते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह सभी (अ)काल आत्माओं के तख्त हैं। आत्मा अकाल है, जिसको काल खा न सके। बाकी तख्त तो बदलती (रह)ती है। अकाल मूर्त आत्मा इस तख्त पर बैठती है। पहले छोटा तख्त होता है फिर बड़ा हो जाता है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा छोटी तख्त पर जाकर बैठती है। आत्मा कहती है यह मेरा शरीर है। हम एक शरीर छोड़ (दूस)रा लेता हूँ। आत्मा अकाल है। बाकी इनमें अच्छे वा बुरे संस्कार होते हैं। तब तो कहा जाता है ना यह कर्मों (का) फल है। आत्मा कब विनाश नहीं होती है। आत्मा का बाप है एक। यह तो समझना चाहिए ना यह बाबा .... ई शास्त्रों की बात नहीं सुनाते हैं। वह शास्त्र तो सभी हैं भक्ति मार्ग के। उनको भूसा कहा जाता है। जो कोई (का)म का नहीं। वेद–शास्त्र पढ़ते–2 हम सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हैं। साधु–सन्यासी भी गंगा स्नान करने जाते (हैं)। उससे कोई पावन थोड़े ही बनते हैं। वापस तो कोई जा नहीं सकते। पिछाड़ी में सभी जावेंगे। जैसे मकड़ों (का), मक्खियों का झुण्ड जाता है ना। मक्खियों की भी क्वीन होती है। उनके पिछाड़ी सभी जाते हैं। बाप भी जावेंगे तो उनके पिछाड़ी सभी आत्माएँ भी जावेंगी। वहाँ मूलवतन में जैसे सभी आत्माओं का मनारा है। यहाँ ..... है मनुष्यों का झुण्ड। तो यह झुण्ड भी एक दिन भागना है। बाप आकर सभी आत्माओं को ले जाते हैं। (शि)व की बारात कहा जाता है ना। बच्चे कहो वा सजनियाँ कहो। बाप आकर बच्चों को सिखला करके पढ़ाकर और फिर याद की यात्रा सिखलाते हैं। पवित्र बनने बिगर तो आत्मा जा नहीं सकती। जब पवित्र बन जावेंगी तब पहले2 शान्तिधाम जावेंगी। वहां जाकर सभी निवास करते हैं। वहाँ से फिर आहिस्ते आते रहते हैं। वृद्धि होती रहती है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो फिर तुम ही पहले2 भागेंगे बाप के पिछाड़ी। तुम्हारा बाप के साथ अथवा साजन के साथ योग है। राजधानी बननी है ना। सभी इकट्ठे नहीं आते हैं। झाड़ आहिस्ते2 वृद्धि को पाता है ना। पहले2 तो आदि सनातन देवी देवता धर्म जो बाप स्थापन करते हैं। पहले2 हमको ब्राह्मण बनाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। प्रजा में भाई–बहन हो जाते हैं। ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ ढेर हैं। जरूर निश्चय बुद्धि ....गे। तब तो इतने ढेर हुये हैं। बाबा ब्राह्मण कितने होंगे। कच्चे वा पक्के? कोई तो 99 मार्क्स लेते हैं कोई 10 मार्क्स लेते हैं। तो गोया कच्चे2 ठहरे ना। तुम्हारे में भी जो पक्के हैं वह जरूर पहले आवेंगे। कच्चे वाले पिछाड़ी .... आवेंगे। मूलवतन में सभी आत्माएँ रहती हैं। फिर वृद्धि होती जाती है। चोले बिगर आत्मा पार्ट कैसे बजावेंगी। ...ह पार्टधारियों की दुनियाँ है जो फिरते रहते हैं। सतयुग में हम सो देवता थे। फिर हम सो क्षत्रिय बने। फिर हम .... वैश्य, शूद्र बने ..... अभी इसको कहा जाता है संगमयुग। यह भी जानना चाहिए यह पुरूषोत्तम संगमयुग है।

यह भी अभी बाप ने बताया है। पहले तो हम उल्टा ही समझते आये कि कल्प की आयु लाखों वर्ष है। अभी बाबा ने बताया है कल्प लाखों वर्ष का नहीं होता है। यह तो पूरे 5000 वर्ष का है। आधा कल्प है रामराज्य, आधा कल्प है रावण राज्य। लाखों वर्ष का कल्प हो तो आधा आधा भी हो न सके। यहाँ तो पूरा आधा कल्प है रामराज्य, आधा कल्प है रावण का राज्य। सुख और दुःख की यह दुनियाँ बनी हुई है। यह अभी बेहद की नॉलेज बेहद का बाप ही देते हैं। शिवबाबा के शरीर का कोई नाम नहीं है। यह शरीर तो इस दादा का है। बाबा कहाँ है। बाबा ने थोड़े समय के लिये यह लोन लिया है। बाप कहते हैं हमको मुख तो चाहिए ना। यहाँ भी गऊमुख बनाया है। पहाड़ों से पानी तो जहाँ तहाँ आते हैं ना। यहाँ फिर गऊ का मुख बना दिया है उनसे पानी आता है। उनको गंगाजल समझ लेते हैं। अब गंगा फिर कहाँ से आई। यह है सभी झूठ। झूठी काया, झूठी माया, झूठे सब संसार..... सभी झूठ ही झूठ है। भारत जब स्वर्ग था तो सच्च खण्ड कहा जाता था। फिर भारत ही पुराना बनता है तो उनको झूठ खण्ड कहा जाता है। बाप कहते हैं तुम हमारी कितनी ग्लानी करते हो। सर्वव्यापी कह कितनी बाप की इनसल्ट, डिफेम करते हो। अभी केस कौन चलावे। बाप आकर केस चलाते हैं। तुम खुद ही बतलाते हो। बाबा हमको पावन बनाकर इस पुरानी दुनियाँ से ले चलो। बाप कहते हैं मेरे सभी बच्चे काम चिक्षा पर चढ़कर काले बन कंगाल हो गये हैं। बाप बच्चों को बैठ कहते हैं तुम तो स्वर्ग के मालिक थे ना। स्मृति आती है। बच्चों को ही समझाते हैं। सारी दुनियाँ को तो नहीं समझाते। तुमको ही समझाते हैं। तो मालूम पड़े हमारे बाप कौन हैं। बाप को कह देते हैं कुत्ते–बिल्ले में है। ठिक्कर–भित्तर में है। जैसे कि जंगली जानवर बन गये हो। इनको कहा जाता है फारेस्ट ऑफ थोर्नस। सभी से बड़ा कांटा काम का लगाते हैं। कलियुग है अपवित्र दुनियाँ। सतयुग है पवित्र दुनियाँ। पवित्र देवताओं के आगे जाकर मनुष्य नमन करते हैं। बहुत भक्त हैं वैजीटेरियन्स हैं; परन्तु ऐसे नहीं कि विकार में नहीं जाते हैं। ऐसे तो बहुत बाल ब्रह्मचारी भी रहते हैं। छोटेपन से ही कब छी–छी खाना आदि नहीं खाते हैं। सन्यासी भी कहते हैं निर्विकारी बनो। घर–बार .... सन्यास कराते हैं। दूसरे जन्म में भी गृहस्थी पास जन्म ले फिर घर–बार छोड़ चले जाते हैं। सतयुग में यह कृष्ण आदि देवताएँ कब घर–बार छोड़ते हैं क्या? नहीं। तो उन्हों का है हद का सन्यास। अभी तुम्हारा बेहद का सन्यास है। सारी दुनियाँ का, संबंधियों आदि का भी सन्यास करते हो। तुम्हारे लिये अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है। तुम्हारी बुद्धि स्वर्ग तरफ़ ही जावेगी। तो शिवबाबा को ही याद करना है। बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो। मन्मनाभव। मद्याजीभव। तो तुम देवता बन जावेंगे। यह वही गीता का एपीसोड है। संगमयुग भी है। मैं संगमयुग पर ही यह सुनाता हूँ। राजयोग जरूर आगे जन्म में संगम पर ही सीखे होंगे। यह सृष्टि बदलती ..... ना। तुम पतित से पावन बन जाते हो। अभी यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। जबकि हम ऐसे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। हरेक बात अच्छी रीत समझ और निश्चय करनी है। यह कोई मनुष्य थोड़े ही कहते हैं। य.... श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत है भगवान की। बाकी सभी हैं मनुष्य मत। मनुष्य मत से गिरते आये हो। अभी श्रीमत से तुम चढ़ते हो। बाप मनुष्य से देवता बना देते हैं। दैवीमत स्वर्गवासियों की है। और वह है ... ...वासियों की मनुष्य मत, जिसको रावण मत कहा जाता है। रावण राज्य कोई कम नहीं है। सारी दुनियाँ पर राज्य है। यह बेहद का लंका है जिस पर रावण का राज्य है। फिर नई दुनियाँ में सिर्फ़ देवी देवताओं का राज्य होगा। वहाँ बहुत सुख होते हैं। स्वर्ग कितनी महिमा है। कहते भी हैं स्वर्ग पधारा। तो जरूर नर्क ..... ना। हेल से गया तो जरूर फिर हेल में ही आवेगा ना। स्वर्ग अभी है कहाँ। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं .....। बाप कहते हैं यह वेद–शास्त्र आदि सभी भक्तिमार्ग के हैं। भक्तिमार्ग है ही उतराई का मार्ग। यह है .....मार्ग । जिसके लिये बाप बैठ नालेज देते हैं। बैटरी भरते हैं। माया फिर लिंक तोड़ देते हैं। कहते हैं बाबा ..... रोको। आने न दो। हम लिखते हैं माया को तो हम कहते हैं खूब जोर से ठूंसा मारना। ताकत देखना ..... नहीं है। बाकी हनुमान आदि की बात है नहीं। यह सभी हैं झूठी कथाएँ। झूठी बातें सुनते2 झूठ ही बन(ते) हैं। अच्छा, मीठे2 बच्चों को बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।